सहारनपुर नगर में अपराध समस्या एवं निवारण 'एक अपराध भौगोलिक अध्ययन'

*डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा

प्रस्तावना :—अपराध की समस्या मनुष्य जाति के लिए एक विशालकाय समस्या है। अपराध सदैव से ही हमारी सभ्यता का एक अभिन्न अंग रहा है। अपराध एवं अपराधीकरण हमेशा से मनुष्य जाति के साथ जुड़ा रहा है। मानव सभ्यता के सैंकड़ों वर्षों से योग्य विद्वानों ने अपराध के कारणों एवं अभिशापों को जानने की चेष्टा की है। इसी दिशा में अपराध को नियन्त्रित करने हेतु विभिन्न मतों को रखा जा चुका है, किन्तु अब तक पूर्ण रूप से कोई भी कारगर सिद्ध नहीं हो पाया है। अपितु सभ्यता एवं तकनीकी विकास के साथ–साथ अपराध की तकनीक एवं अपराध दर में भी वृद्धि पायी गई है। आज के युग में तकनीकी विकास एवं भौगोलिक सीमाओं से परे मानव के एक–दूसरे से जुड़ने के कारण अपराध एक गम्भीर समस्या बनता जा रहा है। अपराध का तात्पर्य कानून के उल्लंघन से है अर्थात् अपराध जानबूझ कर किया गया कार्य है जिसके द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक कानून, नियमों व सिद्धान्तों का उल्लंघन होता है। इस उल्लंघन से ही प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों की हानि होती है।

समस्या :—स्वतन्त्रता के बाद सहारनपुर की जनसंख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। जनसंख्या की नियमित वृद्धि से यह परिणाम सामने आया है कि रहने की जगह व घरों की कमी अत्याधिक भीड़–भाड़ वाले मुहल्ले, नगर सम्बन्धी गांव एवं यातायात सघनता के कारण कानून व व्यवस्था की समस्या एक बहुत बड़ा मुद्दा बन गयी है। अपराध एक सामाजिक समस्या है जिसके कारण अनेक समस्यायें जन्म लेती हैं, जैसे आर्थिक संकट, अपहरण, चोरी, आतंक का वातावरण इत्यादि। अपराध समस्या के कारण सहारनपुर नगर के ओजपुरा, हिम्मतनगर, कमेला कालोनी, ढ़ोलीखाल इत्यादि सम्पूर्ण सहारनपुर में कुख्यात हैं। इतिहास पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि यह समस्या राजा अकबर के समय से चली आ रही है और वर्तमान में यह समस्या बहुत अधिक सक्रिय हो गयी है।

अध्ययन क्षेत्र :—सहारनपुर पश्चिमी उत्तर प्रदेश का महत्त्वपूर्ण जिला है। सहारनपुर नगर जिले के हृदय में बसा हुआ है। जिसकी ज्यामितीय स्थिति 29°18′ उत्तरी अक्षांश तथा 77°33′ पश्चिमी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह मेरठ से 120 किमी० तथा दिल्ली से 164 किमी० की दूरी पर पड़ता है। यह समुद्रतल से 270.8 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा 891.8 मिमी० है। सहारनपुर नगर पुलिस प्रशासन की दृष्टि से 6 पुलिस थानों में बंटा है। यह पुलिस थाने कोतवाली सदर बाजार, कोतवाली नगर, कोतवाली देहात, थाना मण्डी, थाना कुतुबशेर एवं थाना जनकपुरी हैं। इन थानों के अन्तर्गत 28 पुलिस चौकियाँ हैं। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र की कुल जनसंख्या 4,55,754 है जो 3479.8 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर निवास करती है।

विधि तन्त्र:—प्रस्तुत शोध पत्र सहारनपुर नगर की अपराध समस्या से सम्बन्धित है। समस्या का आभास समाचार पत्रों में अपराध की छपी घटनाओं के आधार पर निश्चित किया गया है। अपराध के आँकड़े एस०एस०पी० कार्यालय एवं पुलिस थानों से प्राप्त किये गये हैं। इस शोध पत्र में वर्ष 2008 के आँकड़े प्रयोग में लाये गये हैं।

सहारनपुर नगर में घटित होने वाले अपराधों के प्रकार :—सहारनपुर नगर में विभिन्न प्रकार के अपराध घटित होते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। इन विभिन्न प्रकार के अपराधों की प्रवृत्ति के आधार पर इन्हें मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है। व्यक्ति से सम्बन्धित अपराध एवं सम्पत्ति से सम्बन्धित अपराध।

1. **व्यक्ति से सम्बन्धित अपराध**:—हत्या, अपहरण, दंगा एवं बलात्कार व्यक्ति से सम्बन्धित कुछ गम्भीर अपराध हैं। वर्ष 2008 में कुल अपराधों की संख्या 377 थी, इनमें से सम्बन्धित अपराध 51 (13.53%) घटित हुए। इन अपराधों में हत्या 14 (2.71%), अपहरण 4 (1.06%), दंगा 27 (7.16%) एवं बलात्कार 6 (1.59%) घटित हुए।

2. **सम्पत्ति से सम्बन्धित अपराध**:—वर्ष 2008 में सम्पत्ति से सम्बन्धित अपराधों की संख्या 326 थी जो कुल अपराधों की 86.47% है। इन अपराधों में चोरी की 321 (85.15%), लूट 5 (1.33%) एवं डकैती शून्य (0%) इत्यादि अपराधिक घटनायें घटित हुईं।

अपराधों के उत्तरदायी कारक:—सहारनपुर नगर का सूक्ष्य निरीक्षण करने पर विदित होता है कि भौगोलिक परिस्थितियाँ, तकनीकी शिक्षा का अभाव, पुलिस प्रशासन की शिथिलता, राजनैतिक भ्रष्टाचार, इत्यादि अपराधों के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है।

भौगोलिक परिस्थितियाँ :— सहारनपुर नगर की भौगोलिक परिस्थितियाँ या दूसरे शब्दों में हम उसे पर्यावरण भी कह सकते हैं, अपराधों के लिए उत्तरदायी है। इन भौगोलिक परिस्थितियों

*ब्रह्मपुरी पेपर मिल रोड, सहारनपुर

तालिका–1 आपराधिक आंकड़े (वर्ष 2008 के अनुसार)

क्रमांक	अपराध	संख्या	प्रतिशत
1.	हत्या	14	3.71%
2.	अपहरण	04	1.06%
3.	दंगा	27	7.16%
4.	बलात्कार	06	1.59%
5.	चोरी	321	85.15%
6.	लूट	05	1.33%
7.	डकैती	00	0.00%
	योग	**377**	**100%**

स्रोत : पुलिस थानों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित

में, भौगोलिक कारण, गन्ने की फसल का प्रभाव एवं ऋतुओं का प्रभाव आदि को सम्मिलित किया गया है। जिनका प्रभाव अपराधों पर परोक्ष रूप से परिलक्षित होता है।

(क) नगर में अपराध के भौगोलिक कारण :– उत्पादन और आर्थिक प्रगति के फलस्वरूप मानव प्रवृत्ति सुख, भोग–विलास और ऐश्वर्यमय जीवन बिताने की ओर बढ़ती जा रही है। अतः व्यक्ति अपनी लालसा पर नियन्त्रण रखने में स्वयं को असमर्थ पाता है और जब वह अपनी इच्छायें वैध साधनों से पूरा करने के असमर्थ रहता है तो स्वाभाविकतः अवैध तरीकों का सहारा लेता है और वह अपराध करके उन्हें हासिल करना चाहता है।

(ख) गन्ने की फसल का प्रभाव :–नगर के आसपास गाँवों के खेतों में गन्ने की फसल भी अपराध करने में सहायक होती है क्योंकि गन्ने की फसल बड़ी होने के कारण अपराधी शाम होते ही खेतों में छिपकर बैठ जाते हैं तथा मौका पाकर राहगीरों को लूटते हैं या नगरों में चोरी करने के बाद भागकर इनमें छिपकर बैठ जाते हैं।

(ग) ऋतुओं का प्रभाव :– अपराधों पर मौसम का भी प्रभाव पड़ता है। भूगोल वेत्ताओं के अनुसार अपराध की स्थिति अनेक भौगोलिक कारकों जैसे प्राकृतिक दशायें, जलवायु एवं ऋतुएँ अपराध को प्रभावित करती हैं। जलवायु के कारण अपराध के प्रकार पर प्रभाव पाया जाता है।

2. तकनीकी शिक्षा का अभाव :– सहारनपुर नगर में तकनीकी शिक्षा का अभाव है क्योंकि नगर में अभी भी 46% लोग अशिक्षित हैं। तकनीकी शिक्षा का अभाव अपराधों की वृद्धि हेतु उत्तरदायी है।

3. निर्धनता :– सहारनपुर नगर में घटित होने वाले अपराधों में निर्धनता महत्त्वपूर्ण कारक रही है। 1980 से पूर्व तक के अपराधों में निर्धनता प्रमुख कारक थी जो अभी भी है। निर्धन

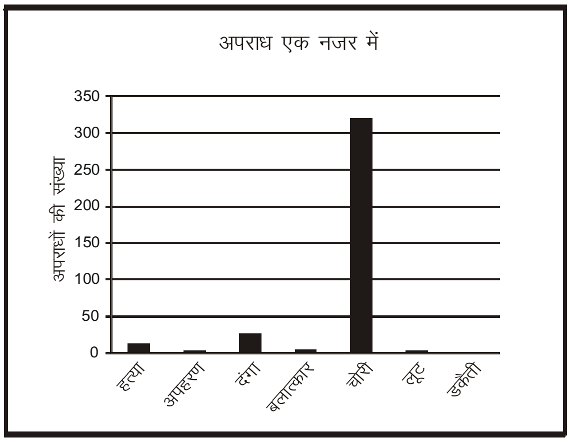

होने के कारण लोग विवश होकर चोरी जैसे अपराध करने को बाध्य हो जाते हैं।

4. पुलिस प्रशासन की शिथिलता :– सहारनपुर नगर में भी अन्य स्थानों की तरह ही अपने कार्यों का निर्वाह पूर्ण रूप से नहीं कर पाती है जिसके कारण यहाँ अपराध की प्रक्रिया अनवरत चल रही है। समाचार पत्रों के अनुसार चोरों के सामने अब पुलिस प्रशासन बौना हो गया है। नगर में पिछले एक महीने से चोरियाँ हो रही हैं।

5. राजनैतिक भ्रष्टाचार :– सामान्यतः नेताओं की छत्रछाया में अपराधी प्रवृत्ति के लोग शरण लेते हैं। सहारनपुर नगर में राजनेता अपने स्वार्थों के लिए अपराधियों का पुलिस से बचाव करते हैं। अतः अपराधियों को अपने दुष्कर्मों की सजा नहीं मिल पाती है और वे अपराधों में निरन्तर लगे रहते हैं। नेताओं के दबाव के कारण थानों में रिपोर्ट दर्ज नहीं होती है।

अपराध निवारण के उपाय :– सहारनपुर नगर में अपराध निवारण हेतु दो प्रकार के उपाय प्रस्तावित हैं जिनके द्वारा क्षेत्र के अपराधों का निवारण किया जा सकता है।

(क) तत्कालिक उपाय :–1. संभाग में पुलिस की संख्या तथा पुलिस के वेतन में वृद्धि की जाये। 2. अपराधों पर शिक्षा दी जाये। 3. अवैध हथियारों पर रोक लगाई जाये। 4. पुलिस को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाये। 5. सड़क मार्गों का विकास किया जाये।6. पुलिस कर्मचारियों को स्थानीय जिले में न पदस्थ किया जाये।

(ख) दूरगामी उपाय :– वे उपाय जिनका प्रभाव गत्यात्मक रूप से दृष्टिगोचर होता है। वे उपाय दूरगामी उपायों के अन्तर्गत रखे गये हैं। 1. बेरोजगारी दूर करने के उपाय किये जायें। 2. कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास किया जाये। 3. सामाजिक कुरीतियों पर नियन्त्रण किया जाये।

संदर्भ ग्रंथ

1. बावेला बसन्ती लाल – भारतीय दण्ड संहिता, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, इलाहाबाद 2. विवेक प्रकाशन, दिल्ली, 1996 3. अमर उजाला 4. दैनिक जागरण 5. शाह टाइम्स 6. एम०जे० सेठना–अपराध एवं समाज